CHAPTER 44

MUSIC

Doctoral Theses

333. बंसल (नीशू)

रागदारी संगीत में सौन्दर्यशास्त्रीय सिद्धान्तों की सार्थकता का मूल्यांकन ।

निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

Th 16457

सारांश

रागों पर आधारित होने के कारण हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को रागदारी संगीत भी कहते हैं । यह एक तथ्य है, राग में नाद, स्वर, आलाप, बन्दिश, तान, सरगम इत्यादि की अनिवार्यता आवश्यक है । लेकिन इनकी उपयोगिता सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि से कैसी होती है, इनकी जानकारी श्रोता और गायक इन सबके लिए बहुत आवश्यक है, क्योंकि हमारा शास्त्रीय संगीत जो है, वह एक उच्च कोटि की कला है । इसलिए इस विशेष विद्या में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न तत्त्व या सौन्दर्यशास्त्रीय दुष्टिकोण से उनका क्या महत्त्व होता है, और कैसे? यह बताने का प्रयास किया है ।

विषय सूची

1. राग के सौन्दर्यात्मक स्वरूप का परिचय 2. सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से विभिन्न परिभाषाओं का विश्लेषण 3. तालों में विभिन्न सिद्धान्तों की सार्थकता 4. रागदारी संगीत में भाव और रस की सार्थकता 5. रागदारी संगीत की विभिन्न गायन विधाओं में कुछ बंदिशों का सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण । उपसंहार एवं ग्रंथ सूची ।

334. भोला (हिना)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं दर्शन के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित समसामयिक विचारधाराएं : एक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

Th 16528

सारांश

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और दर्शन के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित समसामयिक विचारधाराओं ने न केवल भारतीय संगीत को समृद्ध किया है वरन् उसे हर काल और परिवेश में देशकाल पर स्थिति के अनुरूप विकसित होते हुए भी उच्छृंखलता से बचाकर आध्यात्मिकता से सम्बद्ध रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । यही कारण है कि आज के समसामयिक परिवेश में भी शास्त्रीय संगीत आध्यात्मिक चिन्तन से असम्पृक्त नहीं है ।

विषय सूची

1. संगीत व दर्शन का पारस्परिक सम्बन्ध नाद, स्वर, ताल व लय का दार्शनिक विश्लेषण 2. दार्शनिक विचारधाराओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 3. विभिन्न कालों में व्यवहृत संगीत पर दर्शन का प्रभाव 4. शास्त्रीय संगीत की कुछ गेय विधाओं में निहित दार्शनिक तत्व । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

335. BOSE (P V)

Importance of Numeric Five in India Arts with Special Reference to Carnatic Music.

Supervisor : Prof. Deepti Omchery Bhalla

Th 16464

Abstract

Studies Panchaka in non-musical fields, viz Panchaka in relation with man and his body. The biographical sketches with the contributions of select composers like Tyagaraja, Muthu Swamy dikshitar, Syamashastri, Purandarasasa, Swati Tirunal and Veena Kuppayyar are included. Gives some general observations about the Panchaka and their place in different walks of life and the importance of Panchaka in the realm of classical Carnatic music.

Contents

1. A study of Panchaka in general. 2. Panchaka and origin of music. 3. Significance of Panchaka in Indian music. 4. Panchaka and Ragas in various treatises on music. 5. Ghanaraga Panchaka in musical works of the great composers. 6. The great composers who popularised ghana raga Panchaka through their compositions. 7. Conclusion. Bibliography and appendices.

336. CHAIPOTH HUALMANOP
Thai Figurative Sculpture Inspired by Indian Classical Art.
Supervisor : Prof. M. Vijayamohan
Th 16452

Abstract

Examines the various understanding on the rise of the Buddhist figurative sculptures of the Dvaravati period and by referring to how particularly the above two interpretations had put emphasis on the Thai figurative sculptures of the earilier times, the research work seeks to link the Thai and Indian Art through an inquiry intot he paractices of sculpturing of the Buddha and his philosophy or to be precise, the Buddhism inscribed in various figurative forms.

Contents

1. Introduction. 2. The history of Indian classical sculpture. 3. The period of Thai culture inspired by India. 4. Comparison of Indian figurativesculpture and Thai figurative sculpture. 5. Conclusion.

337. डिम्पल
उत्तर भारतीय आधुनिक नाट्य एवम् रंगमंच के विशेष संदर्भ में संगीत की भूमिका।
निर्देशिका : डॉ. नजमा परवीन अहमद
Th 16463

सारांश

रंग तथा मंच को मिलाकर किस प्रकार रंगमंच शब्द बना है । मानव मन, मानव सम्यता को संगीत ने अनादि काल से प्रभावित किया है, का वर्णन प्रस्तुत किया है।

आधुनिक युग में भी गीति नाट्य, नृत्त नाट्य, गद्य नाटकों की अपेक्षा अधिक प्रभावित करते हैं आधुनिक युग में संगीत नाटक अकादमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एवं एशियाई नाट्य संस्थान ये सरकार द्वारा स्थापित संस्थाएँ जन नाट्य संघ तथा पृथ्वी थियेटर्स रंगमंच को बढावा देने में किस प्रकार से सक्रिय है तथा संगीत इनसे किस प्रकार से सम्बन्धित है । इसके अतिरिक्त लोकनाट्य से सम्बन्धित विषय पर भी चर्चा हुई है । जिसमें यह बताया गया है कि भवई, नौटंकी, ख्याल, माच, आधुनिक काल में इनकी क्या प्रासंगिकता है संगीत किस प्रकार इनकें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । इन सबका विस्तृत विवरण किया गया है।

विषय सूची

1. नाट्योत्पत्ति - ऐंतिहासिक पृष्ठभूमि 2. नाट्यकला में संगीत की उपयोगिता 3. आधुनिक रंगमंच एवं संगीत 4. नाट्य, रंगमंच एवं संगीत का अर्न्तसम्बन्ध तथा उनके प्रस्तुतीकरण का स्वरूप 5. बाल रंगमंच एवं संगीत । उपसंहार एवं सन्दर्भ-ग्रंथ सूची ।

338. गौड़ (अदिति)

मारिफुन्नमात में संकलित ध्रुवपदों का विश्लेषण ।

निर्देशिका : प्रो. मन्जुश्री त्यागी

Th 16453

सारांश

ध्रुपद विद्या की अपेक्षा पिछली कुछ शताब्दियों में ख्याल गेय विद्या को अधिक श्रेय प्राप्त हुआ है । परन्तु शास्त्रीय संगीत की दृढ आधार शिला के रूप में ध्रुपद विद्या को आज भी महत्वपुर्ण स्थान प्राप्त है । इसी दृष्टि से मारिफुन्नगमात में संकलित ध्रुपदों का विशेलषण भाषागत, पदगत, तालगत, तथा इन्य विशिष्टताओं का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है ।

विषय सूची

1. ध्रुपद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. मारिफुन्नगमात का ध्रुपद के स्त्रोत के रूप में विश्लेषण 3. मारिफुन्नगमात में संकलित ध्रुपद के पद पक्ष का विश्लेषण

4. मारिफुन्नगमात के ध्रुपदों का विश्लेषण विभाग व ताल की दृष्टि से । उपसंहार, परिशिष्ट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ।

339. गोपाल कृष्ण

नादयोगी स्वामी डी. आर. पार्वतिकर जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

Th 16526

सारांश

स्वामी पार्वतिकर जी के जीवनवृत्त, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, अध्यात्म की और झुकाव, सांगीतिक शिक्षा उनका स्वरूप व वेशभूषा दिनचर्या व शिष्य परंपरा आदि पर प्रकाश डाला गया है । स्वामी जी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। स्वामी जी द्वारा अविष्कृत दत्तात्रेय वीणा की बनावट, वादन विधि, उनकी वादन शैली तथा उससे प्रभावित लोगों के विचार व प्रसंग तथा नादानन्द स्वरलिपि पद्धति पर प्रकाश डाला गया है । स्वामी जी द्वारा प्रस्तुत राग वर्गीकरण की आधुनिक 'श्री नादानन्द पद्धति' के विषय में विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है । स्वामी जी के शास्त्रीय व भक्ति संगीत से संबंधित प्राप्त कुछ रिकार्डिंग व टेपों का विवरण दिया गया है।

विषय सूची

1. जीवन परिचय एवं शिष्य परंपरा 2. बहुआयामी व्यक्तित्व 3. स्वामी जी के आविष्कार व वादन शैली 4. स्वामी डी. आर. पार्वतिकर जी के अनुसंधान 5. स्वामी जी का ताल पक्ष पर शोध (सिद्धान्त एवं प्रयोग) 6.स्वामी जी से संबंधित सामग्री । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

340. गोस्वामी (सुनील कुमार)

राग परम्परा के संदर्भ में सूफ़ी संगीत ।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 16456

सारांश

राग परम्परा के अंतगर्त यह प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार सूफ़ी संतों द्वारा सूफ़ी संगीत को भारतीय संगीत के रंग में समाहित कर एक नया संगीत प्रस्तुत किया जोकि आज आधुनिक युग में सूफ़ी संगीत विद्या के नाम से जन जन में प्रचलित है ।

विषय सूची

1. संगीत की ऐंतिहासिक पृष्ठभूमि एंव उसके संदर्भ में सूफ़ी संगीत 2. भारत में सूफ़ी सम्प्रदाय और सूफ़ी संगीत 3. सूफ़ी संतों द्वारा प्रचलित एवं प्रभावित गेय विद्याों का संक्षिप्त परिचय 4. हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में प्रमुख सूफ़ी संतों का परिचय एवं योगदान 5. राग परम्परा पर आधारित सूफ़ी संगीत की पारम्परिक रचनाओं की स्वालिपी ।

341. गोस्वामी (वन्दना)

पं. विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा रचित बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

Th 16527

सारांश

जीवनपर्यन्त शास्त्र एवं क्रियात्मक रूप में अर्जित संगीत सामग्री को स्थायित्वता प्रदान करने की दृष्टि से भातखंडे ने उसे सामूहिक शिक्षा पद्धति अर्थात् विद्यालय, विश्वविद्यालय पद्धति के रूप में संचरित किया । इस नवीन पद्धति में भी उन्होंने अपने शिष्यों को रचना संकलन, नवीन रचना की प्रेरणा, शास्त्र संकलन, शास्त्र अन्वेषण, नवीन चिंतन आदि सूत्रों के उपयोग की धारणा के लिए निर्देशित किया । इतने अल्प समय में संगीत को एक विशाल वटवृक्ष के समान रूप प्रदान करने वाली इस पूण्यात्मा ने गणेश चतुर्थी, शनिवार, दिनांक 19 दिसंगर 1939 के पुनीत पर्व पर प्रातः 5 बजे शान्ताराम हाऊस, मलबार हिल, बम्बई में महाप्रयाण लिया । अतः अन्त में यह कहना अनुचित न होगा कि पं. भातखंडे के सद्प्रयत्नों से आज हिन्दुस्तानी संगीत अपने पौराणिक रूप से लेकर आजतक एक क्रमवार रूप में संगीत जगत के समक्ष उपस्थित है ।

विषय सूची

1. पं. विष्णु नारायण भातखंडे-जीवन परिचय एवं संगीतोद्धारक के रूप में क्रियान्वित विभिन्न कार्यों का दिग्दर्शन 2. पं. भातखंडे की रचनाओं का साहित्यक एवं सांगीतिक मूल्यांकन 3. पं. भारखंडे द्वारा रचित लक्षण गीतों का साहित्यिक एवं सांगीतिक अवलोकन 4. पं. भातखंडे द्वारा स्थापित सामूहिक प्रणाली एवं निर्देशित शिष्य परंपरा । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

342. कालड़ा (प्रिया)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रागों में अल्पत्व-बहुत्व एवं आविर्भाव-विरोभाव की अवधारणा ।

निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

Th 16455

सारांश

संगीत देशी संगीत मार्गी संगीत के अंतगर्त आने वाली दो धाराएँ 'शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत' का वर्णन है । हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार राग एवं रागों के दसों लक्षण का विस्तृत वर्णन । विभिन्न ग्रन्थों में अल्पव्त-बहुत का वर्णन रागों में अल्पत्व-बहुत्व के उदाहरण एवं विद्वानों के साक्षात्कार द्वारा प्रस्तुत किये गये है । विभिन्न विद्वानों के साक्षात्कार द्वारा उनके विचार आदि का वर्णन किया है । इसके अतिरिक्त आविर्भाव-तिरोर्भाव के उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । उपशास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति इसके अन्तर्गत आने वाले गान विधायें (ठुमरी की व्युत्पत्ति, ठुमरी के धुन राग, ठुमरी के रागों में आविर्भाव-तिरोभाव क्रिया, दादरा आदि के विषय में बताया गया है ।

विषय सूची

1. संगीत का शास्त्रीय विवेचन 2. अल्पत्व-बहुत्व एवं रागों में अल्पत्व-बहुत्व के उदाहरण 4. आविर्भाव-तिरोर्भाव एवं रागों में आविर्भाव-तिरोर्भाव के उदाहरण 5. उपशास्त्रीय गान विधाओं में आविर्भाव-तिरोर्भाव की प्रक्रिया । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

343. मिश्र (उदय कुमार)

भारतीय शास्त्रीय संगीत में बेतिया घराना ''एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' ।

निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

Th 16459

सारांश

घराना शब्द का अभिप्राय, घरानो का आविष्कार एवं संगीत के विभन्न घराने-जैसे ग्वालियर घराना, आगरा घराना, किराना घराना इत्यादि की संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत की गई है । विभिन्न ग्रथों में दी गई विभिन्न विद्वानों द्वारा ध्रुपद की परिभाषा, ध्रुपद की उत्पत्ति एवं उसका विकास तथा ध्रुपद की चार वाणियों का वर्णन किया । बेतिया घराने में ध्रुपद की शुरूआत एवं उसका विकास तथा बेतिया घराने की विशेषओं के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है । बेतिया राज घराने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं यहाँ के कलाकारों का अन्य राजघरानों से संबंध तथा बेतिया राज की वंषावली एवं बंतिया राज घराने के दो प्रमुख ध्रुपद रचनाकार - महाराज आनंद किशोर सिंह एवं महाराजा नवल किशोर सिंह का भी उल्लेख किया गया है । कुछ प्राचीन ध्रुपद कलाकार, वर्त्तमान प्रतिनिधि कलाकार एवं कलाकरों की वंशावली का वर्णन किया गया है । बेतिया घराने में ध्रुपद गायकी का ह्रास, ख्याल गायकी का प्रचलन तथा इस घराने के वर्त्तमान ख्याल गायकों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

विषय सूची

1. घराना 2. ध्रुपर और उसके विभिन्न घराने 3. बेतिया घराने की ऐंतिहासिक पृष्ठभूमि 4. बेतिया घराने का राज घराने से संबंध 5. बेतिया घराने के कलाकार एवं उसकी वंशावली 6. वर्त्तमान परिपेक्ष्य में बेतिया घराने की स्थिति । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

344. NARENDRA KAUR

Analytical Study of Socio-Psycho Objectives in Music.

Supervisor : Prof. Anupam Mahajan

Th 16454

Abstract

It is a detailed report on the role and importance of music in the day-to-day life. The utility of music has been established in many areas ranging from its indispensable role in th existence of the human life also including the other living beings like animals and plants to improving the work-activity. Now-a-days, work places with public dealing like banks, shopping malls, railway stations, etc. are installing music to relieve their clients off the boredom and fatigue caused due to even the smallest wait they might have to undergo and to get a better output from the staff. Includes the study of the role of music in nurturing the social development, identifying the evils in the society and how music can be applied to eradicate them.

Contents

1. Introduction. 2. Music and emotions. 3. Music and personality development. 4. Application of music in present scenario. 5. Social objectives. 6. Music and social evils. 7. Conclusion. Bibliography.

345. राय (शारदा)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत के प्रचार और प्रसार में दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र एवं उसके प्रमुख गायक-वादक कलाकारों का योगदान ।

निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

Th 16458

सारांश

आकाशवाणी का इतिहास व इसकी प्रारम्भिक स्थिति के बारे में चर्चा करते हुये इसके तहत भारत में कब आकाशवाणी का आगमन हुआ कब-कब और कहाँ-कहाँ आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्र खुले इसके बारे में वर्णन किया है । शास्त्रीय संगीत व सुगम के कार्यक्रमों की सूची प्रस्तुत करने के साथ-साथ दिल्ली आकाशवाणी के कुछ प्रमुख शास्त्रीय संगीत व सुगम संगीत के कलाकारों का साक्षात्कार प्रस्तुत किया है । आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र में प्रयोग होने वाले वाद्य व उनके कुछ प्रमुख वादक कलाकारों का साक्षात्कार प्रस्तुत किया है । कुछ प्रमुख संगीतकारों की चर्चा की व उनका संगीत के क्षेत्र में योगदान का वर्णन किया है ।

विषय सूची

1. आकाशवाणी का इतिहास 2. आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र 3. आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र से प्रसारित संगीत कार्यक्रम 4. आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र में प्रयोग होने वाले विभिन्न प्रकार के वाद्य एवं वहाँ पर कार्यरत कुछ प्रमुख कलाकार 5. आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र के कुछ संगीतकारों का परिचय एवं उनका संगीत के क्षेत्र में योगदान 6. आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र के कुछ कार्यरत एवं सेवानिवृत्त कार्यकर्ताओं से साक्षात्कार व संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

346. रेशमा संग (हरनाल)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उत्तर भारतीय माध्यमिक एवं उच्चतर विद्यालयों में संगीत शिक्षा : एक विवेचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. नूपुर रॉय चौधरी

Th 16462

सारांश

वर्तमान संगीत शिक्षा समस्याओं से पूर्ण है । इस विषय में अभी तक ऐसा कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है जिससे इन समस्याओं का समाधान किया जा सके। आज संगीत शिक्षक स्वयं इन समस्याओं में उलझ कर रह गया है तथा उसे इनको सुलझाने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा है । यद्यपि संगीत शिक्षा संबंधी सभी समस्याओं का समाधान कर पाना इतना सरल नहीं है तथापि कुछ समस्याएं ऐसी हैं जिन्हें राष्ट्रीय स्तर पर विचारक-मण्डलों द्वारा विचारों के आदान-प्रदान तथा अनुसंधानात्मक दृष्टि से कार्य करके निश्चित रूप से सुलझाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए जिससे वर्तमान विद्यालयीन संगीत शिक्षाको व्यवस्थित रूप देने में सहायता प्राप्त हो सके ।

विषय सूची

1. आधुनिक शिक्षा पद्धति : एक विवेचन 2. बालक के सर्वांगीण विकास में संगीत शिक्षा की भूमिका 3. संगीत शिक्षण की विभिन्न विधियाँ 4. संगीत शिक्षा में श्रव्य-दृश्य उपकरणों का महत्त्व 5. विभिन्न प्रदेशों के संगीत विषय के पाठ्यक्रम 6. वर्तमान उत्तर भारतीय माध्यमिक एवं उच्चतर विद्यालयों में संगीत-शिक्षा के स्तर की समीक्षा। उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

347. SHAH (SUPRIYA)

Changing Scenario of Performance Practice in Instrumental Music in the 20th Century and its Current Status with Special Reference to Hindustani Music.

Supervisor : Prof. Suneera Kasliwal

Th 16529

Abstract

Focusses on the changes that have been shaping the Hindustani instrumental music in the 20th century and the tendencies that are likely to continue the omnipotent process of change. Examines the need for bringing about all these various changes in Music from the Musicians point of view and also the reactions of the public to such changes. Evaluates the commercialisation of music, populis tendencies and the paradigm shift from the philosophical aspect of art to its commercial efficacy. Focuses on the performance practice prevalent in the pre and post independence era up to the year 2008.

Contents

1. Historical evolution of the repertoire of Hindustani Instrumental music with special reference to the 20th century. 2. New trends in performance practice. 3. Instruments innovation sin existing instruments and new instruments. 4. Fusion and experimentation in Indian classical instrumental music. Conclusion. Bibliography.

348. शमीम

कव्वाली का उद्‌गम, विकास एवं शैलियां सूफ़ीवाद के संदर्भ में ।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 16461

सारांश

कव्वाली के हर पक्ष का गहन अध्ययन किया गया है । सूफ़ीवाद के बारे में विस्तृत जानकारी दी है । महान प्रारंभिक सूफ़ियों के बारे में बताया है । फिर कव्वाली रचनाओं में प्रयुक्त अध्यात्मिक शब्दावली की चर्चा की है । कव्वाली की संगीतिक शब्दावली दी गई है और कव्वाली की शैलियों का वर्णन है । पारंपरिक शैलियों के बारे

में, हज़रत अमीर खूसरों द्वारा अविष्कृत शैलियों के बारे में तथा ख़ासकर पंजाबी सूफ़ियों द्वारा रचित कव्वाली की शैलियों के बारे में तफ़सील से बताया गया है और उनकी स्वरावालियां भी दी गई है । प्राचीन तथा आधुनिक कव्वालों का विवरण दिया गया है ।

विषय सूची

1. सूफ़ीवाद की अध्यात्मिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. कव्वाली गायन शैली की रचनाओं में प्रयुक्त अध्यात्मिक तथा परिभाषिक शब्दावली 3. सूफ़ीवाद में प्रयुक्त अध्यात्मिक ज्ञान यानि तसव्वुफ, धारणाएं, उत्पति तथा सूफ़ीवाद की चार दशाओं का वर्णन तथा विभिन्न भक्ति मार्गों का विस्तृत परिचय 4. सूफ़ी परिभाषा, विद्वानों के सूफ़ियों के बारे में विचार, अंतर्राष्ट्रीय सूफ़ियों का वर्णन, सूफ़ी सिलसिले, सूफ़ियों का भारत में प्रवेश, भारत में सूफ़ी तथा सूफ़ी सिलसिलों का वर्णन 5. कव्वाली परिभाषा, एक परिदृश्य, कारण और उद्देश्य, कव्वाली का इतिहास, जन्म तथा विकास के बारे में विस्तृत जानकारी 6. कव्वाली गायन शैली में प्रयुक्त होने वाली संगीत की परिभाषिक शब्दावली 7. कव्वाली गायन की विभिन्न शैलियां, पारंपरिक शैलियां, हज़रत अमीर खुसरो द्वारा अविष्कृत शैलियां तथा पंजाबी सूफ़ीयों द्वारा अविष्कृत शैलियां 8. विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर के कव्वालों का वर्णन तथा जीवन परिचय 9. विभिन्न प्रसिद्ध ख़ानगाहों का वर्णन जहां प्रतिवर्ष महफ़िल-ए-समाअ या कव्वाली गायन का अयोजन होता है । उपसंहार एवं सहायक ग्रंथों की सूची ।

349. शर्मा (राजेश)

दृष्टिहीन व्यक्तियों के सांगीतिक अध्ययन, अध्यापन एवं मंच प्रदर्शन में आने वाली चुनौतियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ।

निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

Th 16451

सारांश

शोध कार्य में संगीत मनोविज्ञान, विकलांगता, इत्यादि के अर्थों, संगीत द्वारा दृष्टिहीन व्यक्ति के मानसिक, बौद्धिक विकास, संगीत का जड़ चेतन पर प्रभाव, दृष्टिहीन व्यक्ति के संगीत अध्ययन, अध्यापन, मंच प्रदर्शन से सम्बन्धित चुनौतियों और अनके सामाधान का विवरण है ।

विषय सूची

1. संगीत एवं मनोविज्ञान : अन्तर्सम्बंध 2. विकलांगता पर सांगीतिक प्रभाव 3. दृष्टिहीन व्यक्तियों के संगीत-अध्ययन में आने वाली चुनौतियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण 4. दृष्टिहीन व्यक्तियों के संगीत-अध्यापन में आने वाले चुनौतियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण 5. दृष्टिहीन व्यक्तियों को मंच प्रर्दशन में आने वाली चुनौतियों का मनोर्वज्ञानिक विश्लेषण । निष्कर्ष एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

350. शीतल (भगवती सिंह)

स्व. उस्ताद निसार हुसैन ख़ाँ का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में योगदान ।

निर्देशिका : प्रो. कृष्णा 'बिष्ट'

Th 16552

सारांशा

हुसैन ख़ाँ साहब अपनी अनेक सुन्दर बंदिशों के अन्त में 'इनायत' अथवा 'इनायत पिया' लगाकर भावी पीढ़ी के शिष्यों को अपने द्वारा बनाई नवीन, रचनाओं, मौलिक गायकी एवं बेमिसाल अनेक सुप्रसिद्ध बंदिशों से लाभान्वित किया । यही शैली आगे चलकर रामपुर-सहसवान-ग्वालियर घराने के सम्मिश्रण का सौभाग्य प्राप्त करती हुई 'रामपुर-सहसवान घराने' के नाम से सुप्रसिद्धि पाकर, विश्वविख्यात हुई । इस प्रकार 'रामपुर सहसवान घराने' के परम्परागत शिष्यों के बेहतरीन शास्त्रीय गायन प्रस्तुतीकरण द्वारा शास्त्रीय संगीत जगत में अपना एक उच्चस्तरीय स्थान बनाया ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. षड़ज (स) 3. ऋषभ (रे) 4. गन्धार (ग) 5. मध्यम (म) 6. पंचम (प) 7. धैवत (ध) 8. निषाद (नि) । उपसंकार । परिशिष्ट ।

351. सिंह (रणजीत कुमार)

सूफ़ियों के चिश्तिया सम्प्रदाय में संगीत का स्थान : भारतीय परिपेक्ष में एक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

Th 16460

सारांश

सूफ़ी शब्द की व्याख्या सूफ़ी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के मत सूफ़ियों का अविर्भाव सूफ़ियों के मुख्य चार संम्प्रदाय-कादयिा, सुहरवर्दिया, चिश्तिया और नक़्शबांदिया एवं सूफ़ियों की आस्था का वर्णन किया है । सूफ़ी विचार धारा और संगीत, इस्लाम और संगीत एवं सूफ़ी विचारधारा और इस्लाम का संघर्ष विषय के संदर्भ में विस्तृत चर्चा की है । सूफ़ियों की संगीत विषयक मान्यताएँ, संगीत की अध्यामित्कता और दार्शनिक सोपानों का माध्यम विषय पर वर्णन विस्तार पूर्वक किया है । सूफ़ियों का भारत प्रवेश, सूफ़ी कालीन भारत, सूफ़ियों का संगीत प्रेम एवं भारतीय वातावरण से अनुकूलन, इन विषयों का वर्णन किया है । चिश्तिया संप्रदाय में संगीत का स्थान, सूफ़ी ख़ानकाहों में संगीत का प्रचलन, क़व्वाल गायकों द्वारा गायन, गायन की नवीन शैलियाँ एवं हिन्दी गीतों का समावेश विषयों का विस्तृत वर्णन किया है । सूफ़ी संगीत के महत्व का वर्णन किया है । प्रमुख सूफ़ी संगीतज्ञों का परिचय दिया है ।

विषय सूची

1. सूफ़ी शब्द की व्याख्या 2. सूफ़ी विचारधारा और संगीत 3. सूफ़ियों की संगीत विषयक मान्याताएँ 4. सूफ़ियों का भारत प्रवेश 5. चिश्तिया सम्प्रदाय में संगीत का स्थान 6. सूफ़ी संगीत का महत्व 7. प्रमुख सूफ़ी संगीतज्ञों का परिचय । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

M.Phil Dissertations

352. BORAH (Sangeeta)
Folk Songs of Assam with Special Reference to Kamrupi Lokgeet.
Supervisor : Dr. Nupur Roy Choudhary

353. CHATTERJEE (Arnab)
Aesthetical Study of Dhrupad Compositions Set to Various Talas.
Supervisor : Prof. Krishna Bisht

354. CHATTERJEE (Mandakini)
Role of Swami Vivekananda in the Field of Music.
Supervisor : Prof. Manjushree Tyagi

355. चिरंजीव
ताल ध्यान एवं ताल चित्र : एक परम्परा ।
निर्देशिका : प्रो. मंजूश्री त्यागी

356. दास (शाम्भवी)
पूर्वी उत्तर प्रदेश के ऋतुकालीन लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत का प्रभाव : एक अवलोकन ।
निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

357. DHANYA R
Improtance of Voice Modulation in Relation to the Musical Forms and Compositions in Carnatic Music.
Supervisor : Prof. Deepti Omchery Bhalla

358. फोन्दनी (विकास)
शास्त्रीय संगीत के अन्तगर्त राजस्थानी भाषा में रचित बंदिशों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डा. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी

359. गोस्वामी (अर्चना)
रागदारी संगीत के संदर्भ में ताल की भूमिका : एक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. नज़मा परवीन अहमद

360. गुप्ता (संगीता)
दिल्ली राज्य के प्रशासनिक विद्यालयों में संगीत की स्थिति ।
निर्देशिका : डॉ. अलका नागपाल

361. झा (शंकर नारायण)
पूर्वांचलीय लोक संगीत की गेय विधाएँ एक अवलोकन ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

362. लूथरा (जागृति)
बनारस घराने की संस्कृति का प्रदर्शनात्मक कलाओं पर प्रभाव ।
निर्देशिका : प्रो. अंजली मित्तल

363. मुनीश शंकर
भारतीय शास्त्रीय संगीत में तंत्री वाद्यों का योगदान ।
निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

364. पाण्ड़े (निशा)
उत्तर व दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत की गानविधाओं में नवीन प्रवृतियों का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

365. पटवा (विपिन)
ग़ज़ल गायकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप : आधुनिक काल के विशष्ट सन्दर्भ से।
निर्देशिका : प्रो. मधुबाला सक्सेना

366. REJI, T S
Evolution of Veena Before and After the Period of Raghunatha Nayik of Tanjore.
Supervisor : Dr. T. V. Manikandan

367. शर्मा (नेहा)
श्रुति वाद्य और आधुनिक काल में इसके बदलते स्वरूप ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल

368. श्रीवास्तव (प्रीति)
तंत्री वाद्यों में गत का क्रमबद्ध विकास ।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

369. शर्मा (राजेश कुमार)
उ. युनुस हुसैन खाँ बंदिशों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. नुपूर राय चौधुरी

370. शर्मा (रोहित कुमार)
आधुनिक काल की राग वर्गीकरण पद्धतियों का समालोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. सुदीप्ता शर्मा

371. शर्मा (विकास)
शास्त्रोक्त रागों के आधार पर पंजाब की लोकधुनों का अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. मधुबाला सक्सेना

372. सलीम कुमार
सूफ़ीयाना कलामों पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रभाव ।
निर्देशक : प्रो. सुनीता धर

373. त्रिपाठी (ब्रजेन्द्र)
पारम्परिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत शिक्षण-पद्धति का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

374. यशोदा
शास्त्रीय संगीत में तराने का महत्त्व ।
निर्देशिका : डॉ. नुपुर रॉय चौधरी